द्वितीय अध्याय:

धर्मवीर भारती के उपन्यासों के पात्र।

2 "धर्मवीर भारती" के उपन्यासों के पात्र"

2:1 उपन्यास मे चरित्र (पात्र) का निर्माण –

जिसप्रकार कथावस्तु के मूल में कहानी होती है, उसीप्रकार चरित्र–चित्रण के मुल में मनुष्य होता है । उपन्यास के अधिकांश पात्र मानव–प्राणी होते हैं । उपन्यासकार पहले मनुष्य होता है, इसलिए उसकी आत्मीयता पात्रों के साथ बढ़ती है । उपन्यासकार पात्रों का नामकरण करता है, स्त्री और पुरुष के वर्गों में उन्हे विभाजित करता है । ये चरित्र उपन्यासकार की अनुभूति की विव्रता के माध्यम से उत्तेजना के क्षणों में उपन्यासकारके मस्तिष्क से निःसृत होते है । अतः वह अपने बौध्दिक –कौशल्य के द्वारा चरित्र का निर्माण करता है । इस चरित्र से उसका निकट सम्बन्ध रहता है ।

उपन्यासकार समाज में बहुविध स्वभाववाले लोग देखता है और उनमे सें विशिष्ठो को अपनी कथाभुमि के लिए चुनता है । इससमय वह किसी देखे हुऐ पात्रका हुब हू चित्रण नहीं करता, बल्कि भावभंगिमाओं एवं परिस्थितियों के आधारपर चरित्रों के अंतकरण में प्रविष्ट होकर गोपनीय तथ्यों को प्रकट करने का प्रयास करता है । जिसप्रकार मनुष्ट को जीवन में जन्म, मरण, भूख प्रेम तथा बिमारी आदि में गुजरना पड़ता है । उसीप्रकार उपन्यास के पात्र को भी इसी आवस्थाओ मे से जाना पडता है ।

सामान्यतः चरित्र–चित्रण विश्लेषणात्मक और नाटकीय ढंग से होता है । उपन्यासकार विश्लेष्णात्मक रूप में यह सिधा किसी चरित्र को लेकर, उसका बाहय् चित्रण करता है । वह उसकी भावनाओं, वासनाओं, विचारों, उद्देश्यों को स्पष्ट करता है । वह अपने स्वयं निर्मित चरित्रपर टिका करके अधिकारपूर्ण ढंग से अभिप्राय देता है । उपन्यासकार दूसरे वक्र नाटकीय ढंग प्रकार के चरित्र-चित्रण में वह अपने भाषण एवं कृत्योंद्वारा उभारने देता है । उपन्यासकार चरित्र का आत्मविश्लेषण अन्य चरित्रों के द्वारा उनके विषय में कही गई टिप्पणियों की सहायतासे स्पष्ट कर देता है । उपन्यासोमें इन दोनों पध्दतियों का मिश्रण होता है ।

उपन्यास के चरित्र, जीवन के चरित्र से मेल नहीं खाते, वे उसके साथ समानन्तर चलते है । क्योंकि हमें जीवन में एक–दूसरे को पहचानना मुश्किल हो रहा है ।

2:2 उपन्यास में चरित्र–चित्रण का महत्व

उपन्यासों के तत्वो में चरित्र–चित्रण ही महत्वपूर्ण तत्व है । उपन्यास में चरित्र का होना उतना ही आवश्यक है, जितना शरीर के अन्तर्गत प्राण । उपन्यास मानव–जीवन का चित्रण है । उपन्यास की यह मुल विशेषता ही उपन्यास में पात्रों के महत्व को स्पष्ट कर देती है । बिना पात्रों के उपन्यास की कल्पना की जा सकती है और न कथा की । उपन्यास के पात्र "मानव" होने आवश्यक है, क्योंकि उपन्यास मानव–जीवन का चित्रण है । उपन्यास सम्राट प्रेमचंद ने उपन्यास में चरित्र –चित्रण को सर्वाधिक माना है और कहा है, "मै उपन्यास को मानव–चरित्र का चित्र मात्र मानता हूँ । मानव चरित्रपर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोलना ही उपन्यास का मुलतत्व है ।"[1] इस वक्तव्य से सुचित, होता है कि उपन्यास के भीतर चरित्र–चित्रण कितना महत्वपूर्ण है । अतः घटनाप्रधान उपन्यास की अपेक्षा चरित्र प्रधान उपन्यास बहुतही महत्वपुर्ण, प्रभावपुर्ण तथा कुतूहल वर्धक होता है ।

उपन्यासकार की दृष्टि में किसी जीवित मनुष्य का चारित्रिक आदर्शन हो, तब तक किसी नये चरित्र का निर्माण नहीं कर सकता । वह चुना हुआ व्यक्ति लेखकके आसपासका हो सकता है या लेखक स्वयंभी हो सकता है । इस चुने हुए पात्र को लेखक अपनी कल्पनासे सँजोता है । लेखक समाज के विभिन्न स्वभाववाले पात्रों का सुक्ष्म निरीक्षण करके चरित्र का निर्माण करता है । उपन्यासकार उपन्यासमें विशाल कथावस्तु एवं विशाल घटनाओं के माध्यम से पात्रों के चरित्र अर्थात स्वभाव की विविध विशेषताओं का चित्रण विस्तार से करता है ।

प्रास्ताविक –

डॉ. धर्मवीर भारतीने "गुनाहों का देवता' और "सूरज का सातवाँ घोडा" यह दोनों उपन्यास लिखकर हिन्दी क्षेत्रों में अपनी ख्याति बढायी है । एक उपन्यास कथ्य की दृष्टि से तो दूसरा अपनी नविनतम शिल्प की दृष्टि से पर्याप्त प्रसिध्द हो चुका है । पात्रांकन की दृष्टि से यह उपन्यास कहाँ तक सफल हो चुके है । यह देखने के लिए हमें एक–एक उपन्यास के पात्रों का परिचय कर लेना आवश्यक है ।

"गुनाहों का देवता" मे पात्रों का चरित्र–चित्रण

"गुनाहों का देवता" में सन् 1949 के आस–पास के मध्यवर्गीय समाज का वास्तव प्रतिबिम्ब दिखायी देता है । उपन्यासकारने जीवन के खट्टे–मिठ्ठे अनुभवों का अंकन इसमें किया है । वह भारती का देखा परखा और भोगा हुआ जीवन है । इसके कथारसमें युवाकालीन प्रणयभावना रोमानी पीड़ा का माधुर्य भरा हुआ है । उपन्यास रोचक, प्रभावपुर्ण, आदर्शवाद का नमुना है ।

"गुनाहों का देवता" चरित्र प्रधान उपन्यास है । इस उपन्यास में कुल मिलाकर 45 पात्र है । इनमें प्रमुख पात्र के रुपमें चन्दर, सुधा और प्रमिला डिक्रुज आते है । तो गौण पात्र के रुपमें बिनती, बर्टी, रविन्द्र बिसरिया, डॉ. शुक्ला, कैलाश मिश्र और गेसू आदि का स्थान है । इनके अतिरिक्त उपन्यास के विकास में सहायक ऐसे कई पात्रों का नाममात्र उल्लेख दिखाई देता है । इनमें अख्तरमियाँ, बुआ, कामिनी, प्रभा, फूल हसरत, मौलवीमाहब, माथुरसाहब, जेनी, महराजीन, दुबेजी, शंकरलाल मिश्र, हरीहर टण्डन, निलू आदि । इन पात्रों का उपन्यास में कम महत्व है । यह पात्र प्रमुख पात्रों के स्वभाव., कार्य के विकास में सहायक होते है । अपना कार्य होते ही यह पात्र उपन्यास से हट जाते है ।

भारती का हर एक पात्र अपनी (नीजि) विशेषताएँ रखता है । उपन्यास के चन्दर, सुधा, पम्मी, बिनती, बर्टी, गेसू के माध्यम से प्रेम के विविध पहलुओंका उद्‌घाटन किया है ।

2:3 प्रमुख पात्र

2:3:1 चन्दर –

उपन्यास का नायक एवं प्रमुख पात्र है ।

"गुनाहों का देवता" इस रोमांटिक उपन्यास का नायक या प्रमुख पात्र चन्द्रकुमार कपूर है । उपन्यास की कथा नायक चन्दर के ईर्दगीर्द घूमती रहती है । नायक चन्दर के आधारपर ही उपन्यास का नाम "गुनाहों का देवता" रखा है । चन्दर देवता है – गुनाहों से घिरा हुआ देवता है । वह देवत्व की खोज करते हुए गूनाहों के चक्रव्यह में फँसता है । वह सुधा–पम्मी–बिनती के लिए देवता बन जाता है । जैसे सुधा के शब्दो में– "घबडाओ न देवता, तुम्हारी उज्ज्वल साधना में कालिख नहीं लगाऊँगी । अपने आँचल में पोंछ लूंगी ।"[2] . उसीप्रकार बिनती भी चन्दर को देवता समझती है – "आप देवता हो सकते हैं, लेकिन हरेक तो देवता नहीं है ।"[3] उपन्यासकारने सुधा, पम्मी, बिनती , गेसू के माध्यम से चन्दर के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला हे ।

वह असहाय, परीक्षमी एवं प्रतिभासंपन्न छात्र है ।

चन्दर बचपन में अपनी सौतेली माँ से झगडकर अपनी पढाई के लिए परतापगढ से प्रयाग भागकर आया है । वह प्रयाग में बेसहारा अपनी पढाई करता है चन्दर को पनाह देने का काम डॉ.शुक्ला करते है । वह अपने गुरु की सहाय्यतासे अपना पढाई का कार्य करता है ।

वह एक परीश्रमी युवक है । वह अपनी पढाई मेहनत, लगन से करता है । इस मेहनत का फल उसे मिलता है । चन्दर बी.ए. तथा एम.ए. में विश्वविद्यालय में सर्व प्रथम आया है । चन्दर की प्रतिभा के कारण ही वह गुरु का आकर्षण बन चुका है । इतनाही नहीं चन्दर उत्तर प्रान्त में माता और शिशुओंकी मृत्यु संख्या पर निबन्ध लिखता है । इसी निबन्धपर उसे प्रान्त सरकार का स्वर्णपदक मिला है । यह चन्दर के गौरव की बात है ।

वह आज्ञाकारी युवक है ।

अपने गुरु डॉ.शुक्ला की हर आज्ञा का पालन करना अपना परम कर्तव्य समझता है । डॉ.शुक्ला उसपर कोई भी जिम्मेदारी छोडकर निश्चित रह जाते है । उस जिम्मेदारी को चन्दर तुरन्त पूरा करता है । चाहे वह जिम्मेदारी छोटी से लेकर बडी भी क्यों न हो जैसे– सुधा की पढाई । ब्याह के लिए सुधा को तैयार करना । डॉ.शुक्ला के छोटे–मोटे काम भी वह तप्तरतासे करता है ।

उसका तीन नारियों के प्रति प्रेम है ।

चन्दर– सुधा, पम्मी, बिनती इन तीन लडकियोंसे प्रेम करता है । लेकिन चन्दर का सच्चा प्रेम सिर्फ सुधा के साथ रहता है ।

(अ) सुधा के प्रति प्रेम –

सुधा के घर में चन्दर रहने के कारण चन्दर सुधा की घनिष्ठता बढती है यह घनिष्ठता प्रेम में परिणत हो जाती हे । सुधा उसे अपनी लगती है, जिसके नामपर उसे गर्व है । उसका तन–मन सुधा के साथ रहता है । सुधा चन्दर का एक सुनहरा सपना बन जाती है । उसे वह अपने व्यक्तित्व से अधिक चाहने लगता है । उसके लिए सुधा आत्मा के समान बन जाती है । जैसे– "उसके लिए सुधा की पलक का एक आँसू भी देवता की तरह था और सुधा के फूलों जैसे चेहरेपर उदासी की एक रेखा भी उसे पागल बना देती थी ।"[4]

यह उसका प्रेम स्वाभाविक है, पुरुष का नारी के प्रति और नारी का पुरुष के प्रति आकर्षण गुनाह नही है । अतः चन्दर ने भी कोई गुनाह नहीं किया है । यह परस्पर आकर्षण सहज सत्य है । फिर भी लेखक भारतीने चन्दर को "गुनाहों का देवता" इसलिए कहा है कि प्रायः चन्दर गुनाह की राहपर चलते हुए भी देवता है ।

चन्दर का सुधा के प्रति प्रेम आदर्श प्रेम का सुन्दर उदाहरणहै । सुधा के रहते हुए भी वह उसका स्पर्शतक नहीं करता है । उपन्यास में दोनों की सेक्स भावना का उल्लेख नही है । चन्दर का प्रेम आध्यात्मिक धरातल को छूता है ।

चन्दर अपने प्रेमिका की शादी तय करते समय उसके समझमें नही आता है कि– इससे दोनों का जीवन मंगल हो जायेगा । कदापि नहीं दोनों एक–दुसरे से इतना प्यार करते है कि– दोनों को अलग करना मुश्किल है । उसका चन्दर को पता था, फिर भी सामाजिक भिरुता के कारण वह अपनाही नही, अपनी प्रेमिका सुधाका भी जीवन नष्ट करता है ।

(ब) पम्मी के प्रति प्रेम –

सुधा ससुराल जाते ही, चन्दर का मन टूट जाता है । इस समय उसकी घनिष्टता पम्मी के साथ बढती है । पम्मी के संपर्क और संभोग के बाद उसका उध्दिग्न मन शांत होता है । वह पम्मी के संपर्क में जाकर अनुभव करता है – "पम्मी ने आज अपने बाहुपाश में कसकर जैसे मेरे मन की सारी कटुता, सारा विष खींच लिया ।.....

यह वासना का ही दान है ।"[5] अब वह अतित को भुलकर वर्तमान में पम्मी की नशीली निगाहोंमें डूब चूका है । एक दिन गेसू आकर चन्दर को सुधा के प्रेम का स्मरण दिलाती है । तब वह पम्मी से अलग होता है । पम्मी जैसी औरत उसके संपर्क में आकर पवित्र होती है । यह उसके चरित्र की विशेषता है ।

(क) बिनती के प्रति प्रेम –

चन्दर बिनती के सेवाभाव के कारण उसके प्रति आकृष्ठ होता है । उसका यह प्रेम धीरे–धीरे बढता है । इसकी परिणति बिनती के साथ विवाह में हो जाती है ।

चन्दर के शौक –

चन्दर फूलों का बेहद शौकीन है । उसे पढना, बिना दूध की चाय पिना अच्छा लगता है । उसे घुमने की और बाते करने की आदत है । चन्दर को सागर में सैर करने का याने बोटिंग का शौक है । वह बिनती, सुधा के साथ मज़ाक करता है । अपने व्यंग्य बाण से अन्य पात्रों के दोषों को व्यक्त करता है ।

चन्दर की कमजोरीयाँ –

चन्दर के व्यक्तित्व की पहली कमजोरी है – "घोर व्यक्तिवादिता । इस व्यक्तिवादीता के बारे में संम्पा–लक्ष्मणदत्त गौतम कहते है – "इस देवता के गुनाह है"– स्वप्नशील भावुकता, रोमानी पीडा, अनुभवहिनता, प्रणय, प्रणय में साहसिकता और युगानूकूल कर्तव्य बोध का अभाव और आदर्शवादी दृष्टि । यह .देवता ऐसा नादान है कि अपने आदर्श और पवित्रता की भावना के कारण और इनसे भी अधिक अपनी सामाजिक भिरुता के कारण वह अपनाही नही अपनी प्रेयसी, प्रेमिका सुधा का जीवन नष्ट करता है ।"[6] चन्दर अहंकारग्रस्त भी है । तीन नारीयों को संपर्क में आनेपरभी वह असफल प्रेमी बन जाता है ।

नायक का उत्कर्ष –

उपन्यास के पात्र का चरेत्र धीरे–धीरे विकास की ओर जाना चाहिए । "गुनाहों का देवता" में चन्दर देवता है , फिर भी गुनाह की राहपर भटकता हुआ दिखाई देता है । चन्दर का सुधा के प्रति प्रेम पवित्र है । सिर्फ पम्मी टूटे हुए चन्दर का दिल बहलाने का साधन है । इधर–उधर भटकनेवाला चन्दर , सुधा के अस्थिविसर्जन के बाद बिनती को अपना लेता है । इसप्रकार नायक चन्दर का चरित्र विकास की ओर जाता है । लेखक ने अंत में नायक का चरमोर्त्कष खिलाया है ।

चन्दर के चरित्र का जो उपर विश्लेषण किया गया, उस से स्पष्ट है कि, उसमें कुछ वैसे ही गुण दोष है, जो मध्यमवर्गीय समाज के युवकों में मिलते है । वह उपन्यास का नायक एवं प्रमुख पात्र है । वह परीश्रमी, प्रतिभासंपन्न छात्र है ।

उसमें सामाजिक भीरुता और अंहकार ग्रस्त वृत्ति है । जिसके कारण उसका प्रेम असफल होता है । जिसप्रकार उसके चरित्र का पतन होता है, उतनीही गहनतासे उसका उध्दार भी होता है ।

2:3:2 सुधा –

उपन्यास की नायिका या दूसरा प्रमुख पात्र सुधा है । सुधा डॉ.शुक्ला की इकलौती संतान है । उसकी माँ तीन वर्ष – की आवस्था में ही उसे छोडकर स्वर्गवासी हो जाती है । दस वर्षोंतक वह गाँव में बुआ के पास रहती है । वह आठवी कक्षा पढने के लिए इलाहाबाद आती है । वह बी.ए. फाइनल जाते समय उसकी धनिष्ठता चन्दर के साथ होती है । उसका प्रेम चन्दर से होता है । सुधा को चन्दर अपना लगता है । चन्दर के साथ लडती–झगडती रहती है । सुधा की शादी होती है । पाठक उसके प्रारंभिक जीवन में जीतना आकृष्ट है । उतनाही विवाह के बादकी यातनाओंसे आँसू बहा देता है । कथासुत्र सुधा के साथ घूमता रहता है ।

एकनिष्ठ प्रेमिका –

उपन्यास की नायिका सुधा चन्दर के प्रति प्रेम रखती है । यह प्रेम उसके अन्तर्मन में समाया हुआ है । चन्दर उसका अपना है । शादी से पहले जो चन्दर के प्रति प्रेम था वह शादी के पश्चात दुगना हो जाता हे । अपने पति के घरमें सबकुछ आजादी, सुख होते हुए भी, वह दु:खी बन जाती है । उसकी आत्मा सिर्फ चन्दर के लिए बनी है । चन्दर उसका सुनहरा सपना है, बचपन से अंततक चन्दर का नाम ही जपती है । उसका पति कैलाश के वाक्यसे पता चलता है कि– वह मनसे पति की नहीं रहती है । जैसे– "भरसक मै इन्हें दुखी नही होने देता, हाँ अकसर ये दुखी हो जाती है, लेकिन मैं क्या करुं, यह मेरी मजबूरी है, वैसे मै इन्हें भरसक सुखी रखने का प्रयास करता हूँ ..... और ये जायज–नाजायज हर इच्छा के सामने झुक जाती है, लेकिन इनके दिलमें मेरे लिए कोई जगह नही है, वह जो एक एक पत्नी के मन होती है । लेकिन खैर, जिन्दगी चलती जा रही है । अब तो जैसे हो निभाना ही है ।"[7]

सुधा चन्दर के आग्रह से ही कैलाश के साथ शादी करती है । मेरी निगाह में सुधा की इसमें कोयी गलती नहीं है । वह पहले ही उसे कहती है – "मै जानती हूँ कि मै तुम्हारे लिए राखी के सुतसे भी ज्यादा पवित्र रही हूँ, लेकिन मैं जैसी हूँ वैसी ही क्यों नही रहने देते । मै किसीसे शादी नही करुँगी । ..... तुम आज्ञा दोगे तो मै कुछ भी कर सकती हूँ, लेकिन हत्या करनेसे पहले यह तो देख लो कि मेरे --हदय में क्या है ?"[8] फिर भी चन्दर सुधा का मन परिवर्तन करने के लिए कहता है – "सोने की पहचान आग में होती है न । लपटों में अगर उसमें और निखार न आये तभी वह सच्चा सोना है ।"[9]

प्रस्तुत सभी वाक्यपर ध्यान देने से स्पष्ट होता है कि सुधा अपने बरबादी में स्वयं जिम्मेदार नही है, चन्दर ही सुधा का जीवन नष्ट करने में जिम्मेदार है ।

सुधा आज्ञाकारी युवती है । अपने पिता डॉ.शुक्ला की आज्ञा का भी पालन करती है । अपने पिता के कहने से कैलाश के साथ शादी करती है । अपने पिता की सेवा करती है । अपने प्रेमी चन्दर की हर आज्ञा का पालन करती है । जैसे – मै मृत्युशय्यापर भी होऊँगी तो तुम्हारे आदेश पर हँस सकती हूँ ।"[10] "जो तुमने कहा, मैने किया, अब जो कहोगे वह करुँगी ।"[11] चन्दर सुधा की आत्मा है, सुधा की नस–नसमें चन्दर समाया हुआ है । उसकी साँसे भी चन्दर का नाम जपते हुऐ चूक जाती है । जैसे सुधा मृत्यु शय्यापर अस्पताल में चन्दर से कहती है -- "चन्दर यह नरक भोगकर भी तुम्हें प्यार करुँगी .... मै मरना नही चाहती, जाने फिर कभी तुम मिलो, या न मिलो, चन्दर.... उफ कितनी तकलीफ है,...चन्दर ।"[12]

सुधा दु:खी तब होती है – जब चन्दर पम्मी की वक्ष में बैठकर वासना की खोज करता है । अपने देवता" को बुरे पथ से सत्यपथपर लाने के लिए वह "जोगिन"का जीवन व्यथीत करती है । वह प्रायश्चित के रुप में व्रत धारण करती है, पूजा--पाठ करती है । इस समय वह बिमारियों से ग्रस्त होकर, "एबार्शन" से मर जाती है ।

12928
A

सुधा में अतिरिक्त भावुकता है, उसका प्रेम परम्परावादी है । सुधा संस्कारोसे जकडी हुयी नारी है ।

उसके प्रेम में भावुकता और नादानी है । इसमें सुधा का कोई दोष नहीं है । प्रेम नापने और तौलने की वस्तु नहीं है, यहाँ महत्व है भावना का । इस सन्दर्भ में डॉ.कैलाश जोशी का मत सही लगता है,– "सुधा बस सुधा है, जिसमें प्रेम है – प्रेम, जिसमें चित्त की स्थिरता और दृष्टि की एकता का होना नितान्त जरुरी है ।"[13]

"गुनाहों का देवता" उपन्यास की नायिका है । वह स्त्री पात्रों में प्रमुख है । सुधा एक आदर्श प्रेमिका है । असकी चारित्रिक विशेषताओंमें स्पष्टता, बातचीत में मिठास, व्यवहार में कुशल, और आत्म--सम्मान की भावना आदि । उसके व्यक्तित्व में बुध्दि और भावना का समन्वय है । अतः नायिका का चरित्र हिन्दी साहित्य में बेजोड़ बन पड़ा है ।

2:3:3 **प्रमिला डिक्रुज**

प्रमिला ईसाई लड़की है । उसे सब प्यार से "पम्मी" कहते है । वह डॉ.शुक्ला की पुरानी छात्रा है । वह पति के व्यवहारसे असंतुष्ठ होकर वर्तमान में अपने भाई बर्टी के साथ रहती है । उसके नाना "ट्रेनाली डिक्रुज" कौशाम्बी की खुदाई करनेवाले पूरातत्त्ववेता थे । जब डॉ.शुक्ला चन्दर को अपना व्याख्यान टाईप करने के लिए पम्मी के पास भेजते है । तबसे पाठक को उसका परिचय होता है।

पम्मी तेईस बरस की दुबली पतली फॅशनेबल युवती है । वह गाऊन पहनती है , उसके बाल गले तक कटे हुए है । वह एग्लो एण्डियन होने पर भी गोरी नही है । उपन्यासकार उसके रुप सौन्दर्य का वर्णन करते हुऐ कहते है– "पम्मी ट्वायलेट कर चुकी थी और हलकी फ्रान्सीसी खुशबूसे महक रही थे । शॅम्पू से धुले हुए रुखे बाल जो मचल पड़ रहे थे, खुशनुमा आसमानी रंग का एक

नहीं रागझते । ..... आदगी के रागने वक्त–बेवक्त, नाता–रिश्ता, मर्यादा–अमर्यादा कुछ भी नहीं रह जाता ।"[17]

पम्मी चन्दर को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती है । वह चन्दर को हमेशा अपनी नशीली निगाहोंसे जकडना चाहती है । वह चाहती थी कि चन्दर उसके रुप के आकर्षण में डूबा रहे । लेकिन जब पम्मी देखती है कि–"चन्दर उसको बाहोंमें होते हुए भी दूर, बहुत दूर न जाने किन विचारों में उलझा हुआ है । वह उससे दूर चला जा रहा है, बहुत दूर । पम्मी की धडकनें अस्त–व्यस्त हो गयी । उस की समझ में नहीं आया वह क्या करे । चन्दर को क्या हो गया । क्या पम्मी का जादू टूट रहा है ।"[18] पम्मी चन्दर को छोडकर अपने पति के पास जाती है । पम्मी का अपने पति के पास लौटना, चन्दर को धोखा देना नही है । पम्मी अनुभव और उम्र दोनो में चन्दर से बडी है । अतः पम्मी ही चन्दर को अच्छा इंसान बनाने का कार्य करती है ।

पम्मी के चरित्र का और एक पहलू आकृष्ट करता है , वह है – "पम्मी की स्पष्टवादिता । पम्मी अपने दिल में कोयी भी बात छुपाती नही है । चन्दर पम्मी की स्पष्टवादिता को स्वीकारते हुए कहता है– "पम्मी, मुझे तुम्ही एक लड़की मिली जो साफ बातें करती हो ओर एक शुध्द तर्क और बुध्दि के धरातल से । बस मै आजकल बुध्दि का उपासक हूँ, भगवान से चिढ़ है ।"[19]

पम्मी का चरित्र बनाने में उपन्यासकार सफल हुए है । पम्मी पति के पास चली जाती है, जिससे उस के चरित्र का उत्कर्ष होता है । पम्मी शारीरिक प्रेम को महत्व देनेवाली, आजाद, स्वतंत्र विचारों की, परीश्रमी, टायपिस्ट युवती है । वह वासना के द्वन्द्व की प्रतिमुर्ति है । उसका चरित्र मनोविज्ञान के निकट आता है ।चन्दर के संपर्क से वह पवित्र होती है ।

पतला चिपका हुआ झीना ब्लाऊज और ब्लाऊज पर फ्लैनेल फूल पैन्ट, जिस के दो गोलिस कमर, छाती और कन्धेपर चिपके हुऐ थे । होठोंपर एक हलकी लिपस्टिक की झलक मात्र थी, और गलेतक बहुत हलका पाऊडर, जो नजदीक से ही मालूम होता था । लम्बे नाखूनों पर हलकी गुलाबी पैन्ट ।"[14]

पम्मी एक आजाद और स्वच्छंद युवती है । उसे कविता पढ़ने के साथ-साथ चाय पिना अच्छा लगता है । वह सिगरेट भी पीती है । वह अश्लिल पिक्चर भी देखती है । वह पति को छोडकर स्वतंत्र जीवन बिता रही है । वह नाजूक होते हुऐ भी एक उत्कृष्ट परिश्रमी टायपिस्ट युवती है ।

पम्मी शारीरिक प्रेम को महत्व देती है । पम्मी चन्दर को पहली ही मुलाकात में दोस्त बनाती है । वह शारीरिक संबन्धों की दृष्टिसे चन्दर की ओर देखती है । अपनी नशीली निगाहों से चन्दर को आकृष्ट करती है । चन्दर के साथ सेक्स विरोधी बातें करना, सिर्फ उसे जीत लेने का बहाना है । जैसे- "मैं शादी से नफरत करती हूँ । शादी अपने को दिया जानेवाला सबसे बड़ा धोखा है।[15] पत्रद्वारा चन्दर के सामने स्वयं स्वीकार करती है ..... "मन में तीखी प्यास लेकर मैने तुमसे सेक्स-विरोधी बाते शुरु कीं । मुँह पर पवित्रता और अन्दर में भोग का सिध्दान्त रखते हुए भी मेरा अंग-अंग प्यासा हो उठा था ।"[16] पम्मी चन्दर के मन में सुधा ससूराल जाने के कारण पैदा हुई रिक्तता की गहरी छाई को भर देती है । पम्मी टूटा हुआ, बिलखता हुआ, उदास, दुःखी चन्दर को हर स्थिति में संभालने का महत्वपूर्ण कार्य करती है ।

पम्मी चन्दर के साथ सेक्स सम्बन्धी इतनी भयंकर बाते करती है, । जिससे नायक चन्दर का मन विचलित करने में वह सफल हो जाती है । पम्मी चन्दर को बताती है कि राजा हैराद किस तरह अपनी भतीजी सेलामीपर मुग्ध हो गया था । जब चन्दर आश्चर्यसे देखता है तब पम्मी उसे कहती है - "यह सेक्स हैं, मि. कपूर । सेक्स कितनी भयंकर शक्तिशाली भावना है , यह भी शायद तुम

2:4 गौण पात्र

उपन्यास में गौण पात्र का स्थान महत्वपूर्ण है । गौण पात्र कथावस्तु के विकास में सहायक होते है । उपन्यास की मुख्य कथा के साथ अनेक प्रासंगिक कथाएँ चलती रहती है । यह प्रासंगिक गथाएँ गौण पात्रों की होती है । इन प्रासंगिक कथाओं के कारण उपन्यास की मुख्य कथा में उत्सुकता आती है । ये गौण पात्र प्रमुख पात्रों के चरित्र का उद्‌घाटन करते है । अपने आपसी वार्तालाप के द्वारा प्रमुख पात्रों के गुण–दोषों को व्यक्त करते है । उपन्यास में गौण पात्रों के कारण वातावरण में परिवर्तन आता है । गौण पात्रों के विनोद, हास्य, विस्मय, क्रोध आदि भावों के कारण वातावरण बदल जाता है । गौण पात्र कभी–कभी उपन्यास में चमत्कार भी पैदा करते है ।

गुनाहों का देवता में बिनती, बर्टी, गेसू, डॉ.शुक्ला, कवि बिसरिया और कैलाश मिश्र आदि गौण पात्र के रुप में आते है । यह गौण पात्र उपन्यास के कथानक में सहायक है । ये गौण पात्र चन्दर, सुधा के चरित्र पर प्रकाश डालते है । उपन्यास में बिनती, बर्टी, गेसू की अलग–अलग प्रासंगिक कथाएँ है, मुख्य कथा के साथ अंततक चलती है ।

अतः "गुनाहों का देवता" के एक–एक गौण पात्र का चरित्र–चित्रण करना आवश्यक है ।

2:4:1 बिनती –

बिनती डॉ.शुक्ला की विधवा बहन–बुआ की बेटी है । वह देहात में रहनेवाली भोली–भाली सुन्दर लड़की है । बिनती गाँवसे प्रयाग आती है और उपन्यास के अंततक छायी रहती है ।

बिनती वाक्‌चातुर्य में प्रविण है । बिनती बातुनी लड़की है । बोलने में उसकी हमेशा जीत होती है । वह चन्दर के साथ मजाक करती है । वह अपनी मिठी बातों से और स्नेह से सभी का मन जीत लेती है । सेवाभाव उसके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है । वह अपने सेवाभाव से चन्दर का मन जीत लेती है । उसके खाने–पीने का खयाल करती है ।

बिनती प्रतिभा संपन्न युवती है । वह शिक्षा में काफी रुची लेती है । वह एक सुशील, प्रतिभासपन्न लड़की है । बिनती की प्रतिभा, सौन्दर्य से कवि बिसरिया प्रभावित है । उससे प्रेम करना चाहता है । उस के नामपर कवितासंग्रह लिखता है ।

बिनती शरारती युवती है । वह हमेशा शरारते करती है । वह इतनी बडी होने पर भी दाँतसे सुधा के कन्धे को काटती है । वह परीश्रमशील, आज्ञाकारी युवती है । सुधा की शादी की तैयारियाँ, तथा काम रात-दिन करती रहती हैं । वह सुधा ससुराल जातेसमय रोती है । याने वह सुधा के प्रति स्नेह करती है । वह स्नेह से सुधा को "दिदी" कहती है । वह उसके सुख-दुख को बाट लेती है । वह अपनी दीदी की हर एक आज्ञा का पालन करती है ।

बिनती का चन्दर के प्रति प्रेम निःस्वार्थी है । उसको चन्दर से कुछ पाने की लालसा नही है । उसका मन वह स्नेहसे जीत लेती है । एक हप्ते के बाद चन्दर को देखतेही उसके आँखो में आँसु आ जाते है । इस आँसु भरी पलके उठाकर कातर स्वर में वह कहती है - " आप देवता हो सकते है, लेकिन हरेक तो देवता नहीं हैं । फिर आपने कहा था आप आयेंगे बराबर । पिछले हप्तेसे आये भी नहीं । यह भी नहीं सोचा के हमारा हाल क्या होगा । रोज सुबह-शाम कोई भी आता तो हम दौड़कर देखते थे कि आप आये है या नहीं ।"[20]

इसप्रकार बिनती जाने-अनजाने में चन्दर को चाहने लगती है । वह चन्दर को देवता मानती है । वह चन्दर को गलत रास्तेपर जानेसे रोकती है । उसे चन्दर का पम्मी के पास जाना बिल्कुल पसंद नही है ।

बिनती अंधश्रध्दा का शिकार बन जाती है । उसका जन्म होते ही, पिता की मृत्यु हो जाती है । जिससे उसे माता तथा समाज से लांछना, प्रताडना ही मिलती है । उसके लिए माँ की गोद नरक बन जाती है । इतना होने के बावजुद

भी नियती उसके साथ खिलवाड करती है । उसका विवाह तीन बार तय होकर टूट जाता है । उसके मामाश्री–शुक्लाजी वर पक्ष के दुर्व्यवहार से क्रोधित होते है और उसे मंडप से उठवाकर घर लाते है । इन परीस्थितियों का गहरा असर भोली भाली बिनती पर पडता है ।

बिनती स्वाभिमानी एवं विद्रोही युवती है । उसे जन्म से लेकर ब्याहतक, माता तथा समाज से अन्याय होता है । इससमय उसका स्वाभीमान जाग उठता है । वह परीस्थितिवश समाजसे विद्रोह करना सीखती है । वह चन्दर से कहती है – "आखिर नारी का भी एक स्वाभिमान है , मुझे माँ बचपनसे कुचलती रही, नैनें तुम्हें दीदी से बढकर माना । तुम भी ठोकरें लगाने से बाज नही आये फिर भी मैं सब सहती गयी । उस दिन जब मण्डप के नीचे मामाजी ने जबरदस्ती हाथ पकडकर खड़ा कर दिया, तो मुझे उसी क्षण लगा कि मुझमें भी कुछ सत्व है, मै इसलिऐ नही बनी हूँ कि दुनिया मुझे कुचलती ही रहे । अब मै विरोध करना, विद्रोह करना भी सीख गयी हूँ ।"[21]

बिनती सुधा के व्यक्तित्व की ही अगली कड़ी है, जो उपन्यास के शेष भागो में सुधा का स्थान लेती है । वह सुधा के व्यक्तित्वका ही एक अंश है । सुधा के अस्थी–विसर्जन के बाद, उसकी ही राख से बिनती-चन्दर की पत्नी बन जाती है ।

वह प्रतिभासंपन्न, शरारती, आज्ञाकारी युवती है । उसका प्रेम निःस्वार्थी है । उसके व्यक्तित्व में स्वाभिमान तथा विद्रोह की भावना अन्तर्निहीत है । वह गौण पात्र होते हुए भी उपन्यास में अंततक दिखायी देती है ।

2:4:2 बर्टी –

बर्टी उपन्यास का गौण पात्र है । वह प्रमिला डिक्रुज का भाई हैं । बर्टी एक कमजोर, दुबला–पतला ईसाई आदमी है । उसका चरित्र सामान्य होते

हुए भी कई बार बर्टी के सम्मुख नायक चन्दर का चरित्र धुंधला दिखायी देता है ।

बर्टी के जीवन में एक हाद–सा होता है । वह विशप की दूबली–पतली लडकी से प्रेम करता है । उसके साथ शादी करता है । उसकी पत्नी एक बच्ची को जन्म देते ही मर जाती है । बर्टी उस बेटी नाम "रोज" रखता है । लोग उस बच्ची के पिता सार्जेन्ट को ही समझते है । इसपर बर्टी का भरोसा नही है । दो वर्ष के बाद एक दिन साँप के काँटने से "रोज" मर जाती है । उसे इस दु:ख को सहन करना मुश्कील होता है । अत: उसका दिमाग बिघड़ जाता है ।

बर्टी एक मनोवैज्ञानिक चरित्र का पात्र है । उसका दिमाग बिघड़नेसे विक्षिप्तसः रहने लगता है । वह दिनभर फूलों की रक्षा इसलिए करता है कि अपनी प्रेमिका की तरह उन फूलों को कोयी चुरा न ले ।

बर्टी में कहीं भी भावुकता दिखाई नही देती है । उपन्यासकार ने बर्टी का शुध्द यथार्थ परक चित्र प्रस्तुत किया है । जीवन के एक मोडने उसे ओर भी पागल बनाया । वह तोते को मार डालता है और फूलों, पौंधों को तोड–मरोड डालता है । इसका कारण है कि उसके मनमें प्रेमकी जगह नफरत की भावना पैदा हो गयी है । उसका स्वभाव परीवर्तनशील है । एक समय चन्दर द्वारा पकडते ही कमजोर, डरपोक व्यक्तिकी तरह रोता है । लेकिन मसूरी से आनेपर तन्दुरूस्त बर्टी को हम शिकारी के रुप में देखते है । वह एक हाथ बन्दुकपर और एक वक्षपर रख लेता है । वह चिडीया को मारकर देखता है कि गोली –हदय में लगी है क्या नही । उसका यह पागल रुप विचित्रसा दिखायी देता है ।

उसके स्त्री के बारे में विचार निम्नांकित है । वह "प्रत्येक लड़की पति खोजती है और प्रत्येक पत्नी प्रेमी ।"[22] बर्टी अपना दूसरा विवाह जेनी के साथ करता है । जेनी की सालगीरपर उपहार के रुप में उसे प्रेमी देना चाहता है ।

उसका विवाह होते ही उसका पागल पन दूर होता है । अतः वह आम आदमी की तरह जीवन बिताता है ।

उपन्यास में बर्टी का चरित्र स्वतंत्र एवं प्रभावपूर्ण बन गया है । उसे आदर्श में जीना पसन्द नही है अतः वह यथार्थ में जीता है । उसकी विक्षिप्तावस्था के कारण वह मनोवैज्ञानिक पात्र बन जाता है । उपन्यास समाप्त करने के बाद भी बर्टी का चरित्र हमारी स्मृति में सुरक्षित बैठ जाता है ।

बर्टी के चरित्र में स्पष्टता है । वह गौण पात्र है, फिर भी अपने कार्य से उपन्यास की कथावस्तु को गति देता है । उसके पागलपन से ही उपन्यास के वातावरण में परिवर्तन आता है । उस का बहिरंग चित्रण की अपेक्षा अंतरंग चित्रण अधिक सफल हुआ है ।

2:4:3 गेसू –

गेसू उपन्यास का गौण पात्र है । गेसू सुधा की घनिष्टत्तम सहेली है । गेसू शहर के रईस साबीर हुसेन काजमी की लड़की है । उसकी बहन–फूल और छोटा भाई –हसरत का उल्लेख उपन्यास में है ।

गेसू स्वभाव से चंचल और शरारती लड़की है । गेसू ओर सुधा के माध्यमसे उपन्यासकारने कॉलेज जीवन की झाकियाँ पेश की है । गेसू क्लास में हमेशा शरारते करती है । एक दिन पढ़तेसमय आध्यापिका से कहती है– "गुरुजी, गांधीजी आलू खाते हैं या नही ?[23] वह सुधा को अपने दिल की सारी बाते स्पष्ट रूप से बताती है ।

वह उर्दू की शायरी गानेवाली युवती है । जिसके उसके प्रतिभा का ज्ञान होता है ।

जैसे – "कौन ये ले रहा है अंगडाई,
आसमानों को नींद आती है ।"[24]

गेसू एक आदर्श, एकनिष्ठ प्रेमिका है । वह हमेशा अख्तर मियाँ के साथ प्रेम और शादी के सपने देखती है । उस के यह स्वप्न शिशे के भाँति टूट जाते है । अख्तर मियाँ के घरवाले उसकी शादी गेसू की बहन "फूल" से करते है । अपने प्रेमी के प्रति उसके मन में बदला या नफरत की भावना नही है । गेसू मानती है– "बदला, गुरेज, नफरत इससे आदमी न कभी सुधरा है, न सुधरेगा ? बदला और नफरत तो अपने मन की कमजोरी को जाहिर करते है । और फिर बदला मैं लूँ किससे ? उससे, दिल की तनहाईयों में मैं जिसके सजदे पडती हूँ । यह केसे हो सकता है ?"[25] यह एक आदर्श चरित्र का उदाहरण है ।

गेसू की चरित्र विशेषताओं में उसका "त्यागपुर्ण जीवन" महत्वपुर्ण है । अपने प्रेमी से तिरस्कृत हो जानेपर वह आत्मनिर्भर हो जाती है । वह अपने प्रेमी के सुखी जीवन के लिए "नर्स" की नौकरी करती है । इतना ही नहीं वह जीवन में अविवाहीत रहने का निश्चय करती है । अंत तक अपने व्यक्ति स्वातंत्र्य की रक्षा करती है । गेसू की निश्चयवादिता एक खोखला आदर्शपन है ।

2:4:4 डॉ.शुक्ला

डॉ.शुक्ला सुधा के पिता है । वे गवर्नमेंट लॉजिकल ब्युरो में काम करनेवाले व्यक्ति है । उनकी पत्नी का स्वर्गवास हो चुका है । उन्हे एकलौती संतान सुधा है । उस के प्रति उनका गहरा प्रेम दिखायी देता है । अपने बेटी की हर इच्छा पूरी करना ,उनका मकसद बन जाता है ।

वे चन्दर के पालन कर्ता है । डॉ.शुक्ला चन्दर की प्रतिभा से प्रभावित होकर, उसे अपने घर में सहारा देते है । वे चन्दर को अपना बेटा समझते है । उसके करीअर का श्रेय डॉ.शुक्ला को जाता है । अपने बेटी की शिक्षा, शादी और घर की सभी जिम्मेदारीयाँ चन्दर के उपर छोड देते है । वे अपने बेटी की शादी कैलाश के साथ करते है । सुधा ससुराल जाते ही वे एकाकी हो जाते है । सुधा को ससुराल में दुःखी देखकर

वे निराश होते है । अपनी बेटी की मृत्यु का दु:ख उन्हें बदार्श्त नहीं होता है । उनका भगवान के उपर का भरोसा टूट जाता है । अत: वे पूजा–पाठ छोड़कर गाते हुए दिखायी देते है ।

डॉ. शुक्ला की गणना उत्तर भारत के प्रमुख विद्वानोंमें की जाती है । वे गम्भीर अध्ययन करनेवाले उत्कृष्ट अध्यापक है । उनकी बोलचाल में उम्र के साथ साथ काफी नम्रता दिखायी देती है । उनके व्यक्तित्व की गहरी छाप पाठकोंपर पड़ती है । दूबेजी जैसे सद्ग्रहस्थ उनका व्यवहार देखकर प्रसन्न होते है । वे कहते है – "बस अब हम कुछ न खावें । आप बहुत सत्कार किये । हम एहीसे छक गये । आपको देखकर प्रसन्नता भई । आप सचमुच दिव्य पुरुष हौं।[26]

वे पढ़े–लिखे, समझदार व्यक्ति है । वे शिक्षित होनेपर भी रुढी परम्पराओ से प्रभावित है । उन्हे रुढी–परम्पराओं की रीति– रस्मोंपर गर्व है । आगे उनके इस मत में परीवर्तन हो जाता है । इसका कारण है – "अपनी बेटी की शादी अच्छी जगह करने पर भी वह दु:खी है और बिनती के ससुरालवालों का दुर्व्यवहार देखकर निराश होते है । अत: वे रुढी–परम्पराओं के विरोधी होते है । शुक्ला गौण पात्र होते हुए भी उपन्यास में उनका महत्वपुर्ण स्थान है । वे आदर्श पिता, आदर्श पालनकर्ता, गुण संपन्न व्यक्ति एवं ज्ञानी अध्यापक है । उनका व्यक्तित्व का चित्रण करने में उपन्यासकार सफल हुए है ।

2:4:5 कवि–बिसरिया

यह उपन्यास का गौण पात्र है । उसका नाम है– रविन्द्र बिसरिया, जो एक प्रतिभासंपन्न कुशल कवि है । वह हिन्दी में एम.ए. कर रहा है । वह अपनी शिक्षा में रुची लेता है ।

बिसरिया भावुक व्यक्ति है । वह काव्य पढ़कर उसमें भावुकता से बह जाता है । उसमें अतिरिक्त भावुकता है, जिसका परिणाम वह परिक्षा में कई बार फेल हो जाता है ।

बिसरिया बिनती से प्रेम करता है । वह बिनती के सौन्दर्य से मुग्ध हो जाता है । वह अपने कविता संग्रह का नाम "बिनती" रखता है । उसे कविता संग्रह लिखने की प्रेरणा बिनती के सौन्दर्यसे ही मिलती है । बिनती को वह– "शेक्सपीयर की मिराण्डा, प्रसाद की देव सेना, डाण्डे की बीएत्रिस, कीटस की फैनी और सूर की राधा से बढकर माधुर्य अगर मुझे कहीं मिला है, तो बिनती में । [27]

बिसरिया समाज भयसे आंत कित है । अपने कवितासंग्रह का नाम "बिनती" रखता है । जब चन्दर समाजभय सें सूचीत करता है, तब बिसरिया समाजडर से कवितासंग्रह का नाम बदलकर "विप्लव" रखता है । इस कवितासंग्रह की लोकप्रियता से, वह एक प्रगतिशील कवि बनता है ।

वह एक अच्छा अध्यापक है । वह सुधा, - बिनती को पढ़ाने के लिए शुक्ला के घर आता है । हररोज अपनी कुशलता से शिक्षा देता है ।

बिसरिया एक कुशल कवि और भावुक व्यक्ति है । साथ ही प्रतिभासंपन्न तथा अच्छा अध्यापक है ।

2:4:6 कैलाश मिश्र

कैलाश मिश्र सुधा का पति है । वह अपनी पत्नी को सुखी रखने का प्रयत्न करता है । अपनी पत्नी के –हदय में उसके लिए कोई जगह नही है । इसका उसे दु:ख होता है । वह पत्नी की मृत्यु के समय कोलम्बो गया था ।

कैलाश मिश्र एक कॉमरेड युवक है । वह हमेशा राजनीतिमें सक्रिय हिस्सा लेता है । उसका परिवार भी राजनीति से प्रभावित है । उसका बडा भाई– शंकरलाल मिश्र कॉंग्रेस कार्यकर्ता ओर म्युनिसिपल कमिशनर है । उसकी राजनीति की रुचि देखकर सांस्कृतिक मिशनद्वारा उसे आस्ट्रोलिया जाने का अवसर मिलता है । कैलाश को राजनीतिमें काम करनेवाली लड़की की जरुरत थी । अपनी पत्नी को राजनीति से अलग देखकर वह हताश होता है ।

कैलाश साहसी, सुन्दर युवक है । उसने बरेली के लाठी चार्ज में फँसे डॉ.शुक्ला और चन्दर को अपने साहस से बचाता है ।

गुनाहों का देवता के अन्य सहायक पात्रों में अख्तर मियाँ, सुधा की बुआ, कामिनी, प्रभा, फूल, हसरत मौलवीसाहब, माथुरसाहब, जेनी, दुबेजी, शंकरलाल मिश्र, हरीहर टण्डन, ठाकुर साहब, निलू आदि । इन पात्रों का नाममात्र उल्लेख दिखायी देता है । यह पात्र अपना कार्य होते ही उपन्यास से हट जाते हैं । यह प्रमुख पात्र के विकास में सहायक है । कथानक को आगे बढाने और परीवर्तन लाने में महत्वपूर्ण है ।

2:5 "सूरज का सातवाँ घोडा" में पात्रों का चरित्र–चित्रण –

"सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास सन 1952 ई. मे लिखा गया है । अपने पूर्ववर्ती उपन्यास "गुनाहों का देवता" से यह विषय और शिल्प की दृष्टि से भिन्न है । यह शिल्पप्रधान उपन्यास की कोटी में आता है । यह कथात्मक उपन्यास है इसमें अनेक कहानियोमें एक कहानी प्रस्तुत की गयी है । उपन्यास का स्वरुप रोचक, मोहक, सुन्दर बन गया है । इस उपन्यास की छः कहानियाँ समाज की वास्तविकता का दर्शन कराती है । यह उपन्यास अपने पूर्ववर्ती उपन्यास के घोर व्यक्तिवाद की प्रतिक्रिया के रुपमें लिखा है ।

इस उपन्यास में कुल मिलाकर 12 पात्रों की योजना की गई है । इनमें 9 पुरुष पात्र और 3 स्त्री पात्र है । उपन्यास के बहुतांश पात्र निम्न–मध्यवर्ग के है । उपन्यास के प्रमुख पुरुष पात्रों में माणिक मुल्ला और तन्ना हैं । तो प्रमुख स्त्री पात्रों मे जमुना, लिली, ओर सत्ती है । उपन्यास के गौण पात्रो में महेसर दलाल, चमन ठाकुर और रामधन है ।

इन पात्रों के अलावा "मैं" (लेखक), ओंकार, प्रकाश, श्याम यह पात्र श्रोतागण में आते है । तो जमुना की माँ, लिली की माँ, माणिक के भाई और भाभी आदि पात्रों का समावेश होता है ।

2:5:1 माणिक मुल्ला –

माणिक मुल्ला लेखक के मुहल्ले के मशहूर व्यक्ति है । वह उस मुहल्ले के सबसे ज्यादा रंगीन और रहस्यमय हिस्से का निवासी है । उसका परिवार कई पुश्तो से बसा हुआ है । वह अपने भाई और भाभी के साथ रहता है । भाई और भाभी का तबादला हो जानेपर वह अकेला रहता है ।

माणिक उपन्यास का नायक एवं प्रमुख पात्र है । उसका कहानियोंपर पूर्ण अधिकार है । उपन्यास के प्रारंभ से अन्ततक सभी कहानियों में मौजूद रहता है । वह कभी नायक के रुप में, कभी कथाकार के रुप में तो कभी सूत्रधार के रुप में दिखाई देता हे । उपन्यास की कथावस्तु और पात्र माणिक द्वारा निर्मित है । यह कहानियाँ उसके ही जीवन से उठायी गयी है, जिनका भोग माणिक मुल्लाने स्वयं किया है । अतः माणिक उपन्यास का सशक्त पात्र है ।

माणिक मध्यमवर्गीय व्यक्ति है । वह वैयक्तिक न होकर, मध्यमवर्गीय समाज का प्रतिनिधीत्व करता है । उपन्यास में चित्रित समस्याएँ वैयक्तिक न होकर मध्यमवर्गीय समाज की है । माणिक ने निम्न–मध्यमवर्गीय जीवन की समस्त विसंगीतियों को, कटु अनुभवों को भोगा है । इसलिए वह हमारे जिन्दगी के निकट है । वह मध्यमवर्गीय जीवन की शोकांतिका को अपने प्रेम प्रसंगो के द्वारा व्यक्त करता है । माणिक प्रेम करते–करते समाज से बहुत कुछ सिखता है । वह स्वयंम कहता है – "हमारी जिन्दगी में जरा–सी पर्त उखाड़कर देखो तो हर तरफ इतनी गन्दगी और कीचड़ छिपा हुआ है कि सचमुच उसपर रोना आता है । लेकिन प्यारे बन्धुओं, मैं तो इतना रो चुका हूँ कि अब आँख में आँसू आता ही नही, अतः लाचार होकर हँसना पडता है । एक बात और है– जो लोग भावुक होते हैं और सिर्फ रोते है, वे रो–धोकर रह जाते हैं , पर जो लोग हँसना सीख लेते हैं वे कभी–कभी हँसते-हँसते उस जिन्दगी को बदल भी डालते हैं ।"[28]

माणिक एक असफल प्रेमी है । माणिक ने जगुना, लिली, और राती इन लडकियोंसे प्रेम किया है । उसका यह प्रेम असफल होता है । "गुनाहों का, देवता" उपन्यास नायक चन्दर की तरह माणिक भी तीन लडकियाँ से प्रेम करता है । इन दोनों को प्रेम मे अंतर है । चन्दर तीन लडकियों मे से बिनती को अपनी जीवन संगीनी बनाता है, मगर माणिक इन तीन नारीयोंसे साहचर्य पाता है । उनमें से किसी को भी अपनाने के लिए मजबूर होता है । माणिक के हर प्रेम प्रसंग के पीछे मध्यवर्ग के जीवन का घिनौना यथार्थ है, और माणिक के चरित्र की गरिमा इसमें है कि वह खुले आम, हँसी मजाक के साथ उसकी स्वीकृति देता है।

माणिक पहले जमुना से प्रेम करता है । माणिक को जमुना बेसन के नमकीन पूए देती है । उसकी प्रेमिका की शादी एक बुढ़े पति से होती है । वह जमुना से प्रेम कर उसे अन्त तक निभाने में असमर्थ रहता है । माणिक धीरे-धीरे लिली से प्रेम करता है । वह हररोज लिली के यहाँ जाता है , उसके साथ मिठी बातचीत करता है । कभी-कभी माणिक लिली के आँख के आँसू पोंछ लेता है । तत्पश्चात कहता है "मै चाहता हूँ मेरी लिली उतनी ही पवित्र, उतनीही सुक्ष्म, उतनीही दृढ , बने जितनी देवसेना थी । तो लिली वैसी ही बनेगी न ।"[29] माणिक का यह रोमांटिक प्रेम उसे दुर्बल बनाता है । अपनी प्रेमिका लिली की याद के रुपमें "खाओं बदन बनाओं ।" का बोर्ड घरके कमरे में लगाता है ।

माणिक अन्त में निम्न वर्ग की लडकी सत्ति से आकर्षित होता है । उसकी प्रेमिका उसे समय समयपर मदत करती है । माणिक नौकरी करने के बजाय पढना चाहते है । इस पढाई के लिए रुपया सत्ति देने का वादा करती है । माणिक सत्ति के साथ दगाबाजी करता है । अपनी प्रेमिका को मुसीबत में सहारा नही देता है, बल्कि उसे चमन ठाकुर और महेसर दलाल जैसे चरित्रहीन आदमी के पास सौंप देता है । इससे दोनो के प्रेम सम्बन्ध में अन्तर आ जाता है । अपनी प्रेमिका सत्ति के मृत्यु की खबर सुनते ही अपने स्वभाव को आत्मघाती बना देता है । जब उसे सत्ति के जीवित होने की खबर मिली है तब उसके जीवन में निराशा की जगह उत्साह की लहर दौड़ आती है ।

अंत में माणिक तन्ना के खाली जगह पर आर.एम.एस.में नौकरी करता हैं। । यहाँ माणिक के चरित्र का उत्कर्ष दिखलाया गया है । उपन्यास में माणिक प्रमुख पात्र, कथाकार, असफल प्रेमी है । जो मध्यवर्गीय समाज का प्रतिनिधित्व करता है ।

2:5:2 **तन्ना**

यह उपन्यास का दूसरा प्रमुख पात्र है । उपन्यास की दो कहानियों में उसका चरित्र स्पष्ट हुआ है । तन्ना का चरित्र माणिक की अपेक्षा सशक्त बन गया है । आलोचकोंने उसे सहनायक या प्रकरी नायक के रुप में स्वीकार किया है । वह कल्पना की अपेक्षा यथार्थ के धरातलपर जीता है । वह मध्यमवर्गीय जीवन की कटुता का शिकार है ।

तन्ना सामान्य परिवार का युवक है । तन्ना का पिता महसेर दलाल है । तन्ना को भाई नही है, पर तीन बहने है । उसकी माँ छोटी बहन को जन्म देते ही मर जाती है । इस समय उसके पिताजी बच्चों के पालन पोषण के लिए दूसरी औरत लाते है ।

तन्ना को सौतेली माता से अन्याय होता है । वह आतेही तन्ना का फिजुल खर्च बन्द करती है । तन्ना को पढाई के साथ, झाडू से घर की सफाई करना, घर धोना, अपने पिता का हुक्का भरना आदि काम करने पडते है । कभी-कभी भुखा पेट सोना पड़ता है । उसे अपनी पढ़ाई म्युनिसिपॉलिटी के लाल टेन के प्रकाश मै करनी पडती है । अपने भाई के दु:ख से दो बहने रोती है मगर मझली बहन उसे गालीयाँ देती है । उसकी शिकायत बुआ या पिताजी से करती है । तब उसकी सौतेली माँ बुआजी चेहरेपर झूठा रोना लाकर कहती है – "इन कम्बख्तो को मेरा खाना-पिना, उठना-बैठना, पहनना-ओढना अच्छा नहीं लगता । पानी पीकर कोसते रहते है । आखिर कौन तकलिफ है, इन्हे । बडे-बडे नवाब के लडके ऐसे नही रहते जैसे तन्ना बाबू बुल्ला बनाके, पाटी पार के, छैल-चिकनियों की तरह धूमते है ।"[30] इसके पश्चात तन्ना को पिता की मार पीट होती है । इसी हालत में जमुना की माँ ही उसे सहारा देती है । उसकी बेटी उसे खाना खिलाती है ।

तन्ना मातृस्नेही एवं भावुक व्यक्ति है । उसका अपने माता के प्रति प्रेम था, माँ की मृत्यु से दु:खी होता है । वह हमेशा अपनी माँ की याद में रोता रहता है । इसका कारण है कि वह दिल से कमजोर व्यवक है । उसमें भावुकता है, जिससे वह परीक्षा में कई बार फेल होता है ।

तन्ना जमुना के प्रति प्रेम करता है । वह उसके साथ शादी करना चाहता है । लेकिन उसके पिता महेसर दहेज के लालची है और नीचे गोतवाली जमुना को बहु के रुप में पसंद नही करते है । उसके पिताजी ओर जमुना माताजी के बिच इस सिलसिलेमें झगडा होता है । अत: तन्ना निराश होता है और पढाई छोडकर आर.एम.एस. में डाक का काम करता है ।

तन्ना एक ईमानदार युवक है । उसके व्यक्तित्व में ईमानदारी, कर्तव्य - दक्षता दिखायी देती है । जिसके कारण वह अपने सिध्दान्तो या आदर्शोपर स्थित है तन्ना को टूटना या झुकना स्वीकार नहीं है । वह अपने परिवार का स्वयं पोषण करता है । घर के सभी व्यक्तियों का उत्तरदायित्व उसके नाजुक कंधोपर पड़ता है । । इससे तन्ना का शरीर हड्डी का ढाँचा बन जाता है ।

तन्ना का विवाह विधवा की बेटी लिली से होता है । उसकी पत्नि बिमारी के समय उसे छोडकर मायके चली जाती है । इसप्रकार ऐसी हालत में पत्नी भी उसका साथ छोडती है ।

तन्ना के चरित्र में सच्चरित्रता तथा नैतिकता के दर्शन होते है । उसे अपने पिता के अनैतिक सम्बन्ध से घृणा है । जमुना विवाहोपरान्त तन्ना से कामवासना की तृप्ति की इच्छा करती है, इसे वह ठुकराता है ।

तन्ना के चरित्र में विद्रोह, करने की शक्ति नही है । जिसके कारण उसे अपने परिवार और समाज के अत्याचार सहन करने पडते है । इससे उसका जीवन शोकांतीका बन जाती है । अंत में तन्ना का देहांत होता है ।

उपन्यास में तन्ना का चरित्र सशक्त बन गया है । वह मध्यमवर्गीय युवक है । उसके चरित्र में ईमानदारी, सच्चरित्रता, कर्तव्य दक्षता, नैतिकता आदि गुण दिखायी देते है । उसमें विद्रोह करने का साहस नही है साथ ही उसकी भावुकता ही व्यक्तित्व को कमजोर बनाती है ।

2:5:3 जमुना –

जमुना उपन्यास की नायीका है, वह एक मध्यमवर्गीया युवती है । उसके पिता बैंक में साधारण क्लर्क है । उसका घर आर्थिक आभावों का घर है । इसीलिए उसकी शिक्षा उचित रुप में नहीं होती है । जमुना को शिक्षा और मनबहलाव के नाम पर कहानियाँ पढ़ना और सीनेमा के गीत याद करना पड़ता है ।

जमुना पन्द्रह सालकी, गेहुँआ रंग की लड़की है । उसका स्वभाव मिठा और हंसमुख है । वह अपने मुहल्ले के युवक तन्ना से प्रेम करती है । दहेज के अभाव के कारण उसकी शादी तन्नासे हो नही सकती । अतः उसकी शादी एक धनिक बुढ़े पुरुष के साथ होती है । अपने पति से काम–तृप्ति न होते ही वह अनैतिकता की ओर बढ़ती है । जमुना के चरित्र की विशेषता और विकास जानने के लिए उसके जीवन को तीन हिस्सों में बाँटना आवश्यक है ।

विवाहपूर्व जीवन –

वह अपने यौवनकाल में तन्ना नामक युवक से प्रेम करती है । उसके साथ वह शादी करना चाहती है । अपने प्रेमी–तन्ना की माँ चल बसी जातेही, उसे स्नेह, दया, सहानुभुती देने का काम करती है । दोनों एक दुसरें के प्रति आकृष्ट होते है । यह प्रेम रुढीयों, अंधविश्वासों के कारण विवाह में परिणत नहीं होता है । उसके मन में काम–पिपासा जागृत होती है । इसकी तृप्ति माणिक से करना चाहती है । माणिक उसके साथ केवल प्रेम करता है, उसकी काम–पिपासा तृप्त करने में असफल होता है ।

वैवाहिक जीवन –

उसका विवाह वृध्द तथा धनी जमींदार के साथ होता है । जमुना के साथ उसका यह तिसरा विवाह है । जमुना की पति के घर में धन–पिपासा तृप्त होती है मगर काम–पिपासा अतृप्त रहती है । उसका पति संतान पैदा करने मे असमर्थ है । इस समय वह अपने नौकर – रामधन से काम–तृप्ति कर लेती है । इससे उसकी मध्यमवर्गीय नारीयों में चरित्रहीन कहा जाता है ।

वैधव्य जीवन

अपने पति की मृत्यु हो जानेपर वह विधवा बन जाती है । उसे अकेला रहना अनुचीत–सा लगता है । अपने नौकर रामधन को घर में रहने के लिए जगह देती है । अब वह अपने बेटे के साथ शेष जीवन बिताती है ।

जमुना बाहर से जितनी धार्मिक है, उतनी ही अन्दरसे नैतिक पतन का कारण बन जाती है । जमुना धर्मपरायण स्त्री है । उसे कर्मकाण्ड, तीर्थाटन, धार्मिक अनुष्ठान, ज्योतिष्य आदि पर विश्वास है । यहाँ उपन्यास कारने अनमेल विवाह से उत्पन्न समस्या और परीणाम की ओर लक्षित किया है । जमुना का चरित्र यथार्थ एवं सजीव बन गया है ।

2:5:4 **लिली**

यह उपन्यास का दूसरा स्त्री पात्र है । वह प्रकरी –नायक तन्ना की पत्नी है, जिसे सह–नायिका कहा जाता है । उसके चरित्र का विकास अपुर्ण है, जो पुर्णत्व प्राप्त नही कर सकता है । उसका उपन्यासमें एकांग चित्रण हुआ है ।

लिली का वास्तव नाम है– लीला । वह धनवान विधवा की एकलौती बेटी है । वह स्वभाव से चंचल, भावुक, अल्हड शिक्षित स्त्री है । अपनी शिक्षा वह इंटरतक पढती है । उपन्यासकारने उसके पुर्वाध्द के जीवन में युवा–युवतियों के

रूमानी प्रेम का चित्रण किया है । लिली माणिक से प्रेम करती है । वह अपने दिल की सारी बाते माणिक को बताती है । वह अपने प्रेमी माणिक को हमेशा आँखो के सामने देखना चाहती है । उसका प्रेमी उसे मिलने में देर करता है , तो वह कहती है , – "अभी एक दिन नहीं आते हो तो न खाना अच्छा लगता है, न पढना । फिर महिनों महिनों तुम्हें नहीं देख पायेंगे ।"[31] उसके आँख के आँसू प्रेमी पोंछ लेता है । इसप्रकार दोनों का रुमानी प्रेम चलता है । आगे यह प्रेम असफल, एक शोकांतिका–सा बन जाता है ।

उसके जीवन का उत्तरार्ध है – तन्ना के साथ वैवाहिक जीवन । उसके चरित्र में नैतिक साहस और समाज से विद्रोह करने की शक्ति भी है । वह अपने पति के वृत्ति से मेल नही खाती है । अतः दोनों के मानसिक स्तर भिन्न–भिन्न है जिससे उन के जीवन में अन्तर आ जाता है । अतः वह अपने पति को छोडकर मायके चली जाती है ।

लिली समाज की भावना प्रधान तथा रोमान्टिक युवतियों की प्रतिनिधी पात्र है। उसके पूर्वार्ध्द– जीवन के रोमांटिक प्रेम की निरर्थकता और उत्तरार्ध्द जीवन की शोकांतिका का यथार्थ चित्र प्रस्तुत हुआ है । लीली के चरित्र सम्बन्धी डॉ.पुष्पा वास्कर का वक्तव्य उचित लगता है । उसके अनुसार-- "इस लाडली घोडी की लगाम बेचारा गरीब तन्ना अपने हाथ में रख नही पाता । वास्तव में यह लिली की यह मनोदशा मध्यवर्गीय समाज के नारी के मानस का एक्स–रे है । लिली अपने स्वप्नों को टूटते देख इतनी क्रूर ओर जर्जर बन जाती है कि तन्ना के साथ वह निर्दयसे निर्दय व्यवहार करने लगती है ।"[32]

उपन्यासकारने लिली के चरित्र में अपूर्णता दिखाई गयी है । उसका एकांग चरित्र–चित्रण करने से उसका चरित्र पूर्ण रुप से विकसित नहीं होता है ।

2:5:5 सत्ती –

यह उपन्यास का प्रमुख – स्त्री पात्र है । "सूरज का सातवाँ घोडा" उपन्यास का महत्वपुर्ण, सजीव एवं बहुचर्चित पात्र– सत्ती है । सत्ती "पाँचवी दोपहर" कहानी की नायिका है । वह अन्य दो नारी पात्रों से भिन्न है । सत्ती अशिक्षित है, सुन्दर है, लेकिन अनैतिक नही है ।

सत्ती अनाथ, निराश्रित लड़की है । सत्ती को चमन ठाकुर ही पाल–पोषकर बड़ा करता है । वह एक बेसहारा अनाथ लड़की है । उसे परिस्थितियोंसे मजबूर होकर घृणित जीवन बिताना पड़ता है । अपने शील का सौदा हर हालत में करना नहीं चाहती है । अपना जीवन चलाने के लिए स्वयंही परीश्रम करती है । वह चमन ठाकुर के साबुण बनानेवाले व्यवसाय में काम करती है ।

"मित्रता" उसके चरित्र का सबसे बडा गुण है । वह माणिक के साथ मैत्री, प्रेम करती है । वह अपने मित्र की सहायता करती है । उसके प्रेमी की पढाई अर्थाभाव के कारण रुकती है । तब उसे अपने हाथ की अँगुठी देती है । वह अपने उदास प्रेमी को संभालने का कार्य करती है । वह कहती है – "उदास मत होओ । अगर मैं यही रही तो मैं दुँगी तुम्हें रुपये । अगर नहीं रही तो देखा जायेगा ।[33] वह अपने प्रेमी मित्रपर कोई संकट आने नही देती है । उसे बताती है– चमन ठाकुर शराब पीकर तुम्हारा कत्ल करने की बाते करता है । उसका यही मित्र उसके कठिण प्रसंग में उसका साथ छोडता है । सत्ती चमन ठाकुर के भय से माणिक के घर आती है । उसके पाँवपर पड़कर रोती है । इस समय वह उसे कहती है– "किसी तरह चमन ठाकुर से छूटकर आयी हूँ । अब डूब मरुँगी पर वहाँ नही लौटूंगी तुम कहीं ले चलो । कहीं । मैं काम करुँगी । मजदूरी कर लूँगी । तुम्हारे भरोसे चली आयी हूँ ।"[34] सत्ती अपने प्रेमी के पास मदद की आशा लेकर आती है माणिक सहायता करने के बजाय उसे पकडकर महेसर, चमन ठाकुर को सौंप देता है। अतः सत्ती के मन में माणिक के प्रति घृणा, हिंसा तथा नफरत की भावना पैदा होती है ।

सत्ती विद्रोह करनेवाली लड़की है । सत्ती को समाज को ठोकरोने विद्रोह करने की प्रेरणा दी है । सत्ती अशिक्षित होनेपर भी अपने शीलको बेचना नही चाहती है । एक साबुण लेनेवाला व्यक्ति उसे कहता है– "साबुण तो क्या मैं साबुणवाली को भी दुकानपर रख लूँ" तो सत्तीने फौरन चाकू खोलकर कहा, "मुझे अपनी दुकानपर रख और ये चाकू अपनी छाती में रख कमीने ।"[35] इससे सत्ती का विद्रोह रुप प्रकट होता है ।

उपेंद्रनाथ अश्क का सत्ती सम्बन्धी कहना उचित लगता है । जैसे – "सत्ती चमन की हत्या कर सकती है , भाग सकती है , नोकरी कर सकती, कोठे पर बैठ सकती है, किन्तु भिख नही माँग सकती ।"[36] स्वयंप्र भारतीने ही कहाँ है– "इन प्रणय प्रसंगो में प्रेम नही है । इनमें केवल रोमानी वासना है, जिसका नशा क्षणिक होता है । प्रेम करनेवाला यदि कोई पात्र है, तो वह केवल सत्ती है । अन्य पात्रों में यौवन सुलभ काम ज्वर मात्र है ।"[37]

सत्ती का पूर्वाध्द प्रभावोत्पादक है तो उत्तरार्ध अत्यंत करुण है । अतः उपन्यास में सत्ती का चरित्र सजीव एवं सशक्त बन गया है ।

2:6 गौण पात्र –

"सूरज का सातवाँ घोड़ा" उपन्यास में प्रमुख पात्रों के साथ गौण एवं प्रासंगिक पात्र भी आ गये है । जिन पात्रों का विशेष महत्व नही होता और वे मुख्य कथा के विकास में सहायक होते है उन्हे गौण पात्र कहते है और जिन पात्रों की उपस्थिति विशेष प्रसंग तक सीमित होती है, उन्हें प्रासंगिक पात्र कहते है । उपन्यास के गौण पात्रो में महेसर दलाल चमन ठाकुर और रामधन आते है ।

2:6:1 महेसर दलाल –

यह उपन्यास का गौण पात्र है । वह तन्ना का पिता है । वह उपन्यास में खलनायक के रुप में आता है । वह निम्न–मध्य वर्ग का ही व्यक्ति है ।

उपन्यासमें उसका परिचय जमुना के मुँह से होता है । उसके सन्दर्भ में जमुना कहती है– "असल में तन्ना बुरा नही है, पर महेसर बहुत कमीना आदमी है और जबसे तन्ना की माँ मर गयी तब से तन्ना बहुत दु:खी रहता है ।"[38]

महेसर दलाल एक क्रूर, कठोर, एवं कर्तव्य शुन्य व्यक्ति है । वह अपने परिवार का प्रमुख (गृहस्थ) है, लेकिन उसे परिवार की चिंता नही है । वह अपने घर की जिम्मेदारियों अपने पुत्रोंपर छोडकर निश्चिंत रह जाता है । वह पुरानी परम्पराओ, जाति प्रथापर विश्वास करता है । अपने पुत्रकी शादी जमुना के साथ इसलिए नही करता है कि – जमुना नीचे गोतवाली लडकी है । वह अपने बच्चों का पालन–पोषण करने में असमर्थ दिखायी देता है । अपने बच्चों को मार–पीट करता है । इससे उसके कठोर वृत्ति के दर्शन होते है ।

महेसर झूठा एवं धुर्त व्यक्ति है । तन्ना की शादी में झुठ–मुठ ही एफ.ए. पास कहकर धनी विधवा की लड़की से शादी करने के पीछे उसकी जायदाद हडपने की धूर्त भावना छीपी हुई है ।

महेसर झगडालू, घमण्डी व्यक्ति है । महेसर उपन्यास के अधिकांश पात्रों के साथ झगडा करता है । अपने पुत्र तन्ना, जमुना की माँ और साबुण बेचनेवाली सत्ति के साथ झगडा करता है । उपन्यास में एक स्थानपर तन्ना से कहता है– "आने दो आज हरामजादे को । खाल न उधेड दी तो नाम नहीं । लडकी के ठूँठ को साडी पहनाकर नौबत बजवाकर ले आऊँगा पर उनके यहाँ में लडके का ब्याह करुँगा जिनके यहाँ....?"[39]

महेसर के चरित्र का सबसे बडा दोष है – उसकी कामातुरता । पुत्रों के पालन–पोषण के लिए युवा स्त्री को रखना और साबुनवाली लडकी सत्ती की ओर आकर्षित होना । उसके अन्दर छीपी कामातुरता को ही इंगीत करते है । वह चमन

ठाकूर पाँच सौ रुपये इसलिए देता है कि– अपनी काम वासना तृप्त करने के हेतु सत्ती को भेज दे । महेसर शराब भी पीता है । वह सत्ती को आकृष्ठ करने के लिए नकली अंगूठी देता है ।

लेखक प्रेम प्रकाश गौतम इस पात्र के बारे में कहते हैं– "महेसर दलाल अत्यन्त निकृष्ठ व्यक्ति है, बहुत गंदा आदमी है, घोर पाखण्डी है, हत्यारा है, जो जमुना, लिली, सत्ती, माणिक, तन्ना सबको खुशीयों का गला घोंटता है ।[40]

महेसर दलाल धुर्त, कठोर, निर्दयी, कर्तव्य विमुख, झगडालू, कामातुर आदि कमजोरियों से युक्त पात्र है ।

2:6:2 चमन ठाकूर –

चमन ठाकूर उपन्यास का गौण पात्र है । वह सत्ती का पालन कर्ता है । उसे सत्ती "चाचा" कहती है, वह रिश्ते से सत्ती का कोई नहीं है । चमन ठाकूर एक नाई है । वह सफर मैना पल्टन में भरती होता है । इस फौज में उसका एक हाथ टूट जाता है । इसी वजहसे वह फौज से निवृत्त होता है । अतः उसे पेंशन मिल जाती है ।

सत्ति उसका विकृत रुप माणिक के सम्मुख प्रकट करती है । वह कहती है– "यह मेरा चाचा बनता है । इसीलिए पाल–पोसकर बडा किया था । इसकी निगाह में खोट आ गयी है । पर मैं डरती नहीं । यह चाकू मेरे पास हमेशा रहता है ।"[41] चमन ठाकूर अपने बेटी समान सत्ती के प्रति आकृष्ठ होता है । यह उसके चरित्र का घीनौना विकृत रुप है ।

चमन ठाकूर नारीयल का हुक्का पिता है । इतनाही नही शराब पीना, गॉजा पीना उसकी आदत बन जाती है । वह सत्ती को महेसर से पाँचसौं रुपये लेकर बेचता है । उसे माणिक का सत्ती के पास आना–जाना पसंद नही है । वह

माणिक का कत्ल करने पर उतारता है । वह हमेशा शराब में डुबा रहता है ।

उपन्यास के अंत मे – चमन ठाकुर औरसत्ती अपने बच्चो को साथ लेकर भीख माँगते है । उपन्यासकार चमन ठाकुर का चरित्र बनाने में सफल हो जाते है । चमन ठाकुर निकृष्ठ पालनकर्ता कामातुर, अपात्र फौजी, नशा में डुबनेवाला व्यक्ति है ।

2:6:3 रामधन

यह उपन्यास का गौण पात्र है । इसका महत्व सिर्फ जमुना वाली कहानीमें है । रामधन एक टाँगेवाला है । वह जमुना के पति तिहाजु दिवार का नौकर है । वह जमुना को टाँगेपर बिठाकर घुमने लेता है । रामधन अपने मालकीन को पुत्र प्राप्ति का अनुष्ठान कहता है । जैसे– "जिस घोड़े के माथे पर सफेद तिलक हो, उसके अगले बायें पैर की घिसी हुई नाल चन्द्र–ग्रहण के समय अपने हाथ से निकालकर उसकी अंगूठी बनवाकर पहनले तो सभी कामनाएँ पुरी हो जाती है ।"[42] इससे जमुना को बेटा होता है । रामधन जमुना की काम–पिपासा तृप्त करता है । रामधन के साथ गुप्त सम्बन्ध प्रस्थापित करने से ही जमुना को बेटा होता है ।

रामधन नौकर ही जमुना का उध्दार करता है । उसे जमुना के घर में ही एक कोठी मिलती है । अतः रामधन विधवा जमुना का आधार स्तंभ बन जाता है ।

सूरज का सातवाँ घोडा" के प्रासंगिक पात्रों में ओंकार, प्रकाश, श्याम, मै (लेखक) यह श्रोतांगण है । तो अन्य पात्रों में जगुना की माँ, माणिक के भाई –भाभी, लिली की माँ और जमुना के पति आदि आते है ।

0 0 0 0 0 0 0

2:7 निष्कर्ष

डॉ. धर्मवीर भारती के दोनों उपन्यास "प्रेम" पर आधारित है । "गुनाहों का देवता" यह उपन्यास आस्कर वाईल्ड के "द पिक्चर ऑफ डोरिअन ग्रे" से प्रभावित है । तो "सूरज का सातवाँ घोडा" बोक्काशियो "डेक्का मेरॉ" और बाल्जाक की "ड्रोल स्टोरीज" का अनुकरण है ।[43]

गुनाहों का देवता" में पात्रों का चरित्र–चित्रण बनाने में उपन्यासकार सफल हुए है उपन्यास मे नायक चन्दर का चरित्र आदर्श बन गया है । उसे "गुनाहों से गीरा हुआ देवता बनाया है । उसका नायक तीन नारीयों से साहचर्य पाता है । उसे अनेकानेक आदर्शोने पूज्य भी बनाया है। लेकिन –हदय में स्थित वासना ने उसकी कमजोरी को प्रकट किया है ।

उपन्यास के स्त्री पात्रों में सुधा और गेसू के चरित्र में एकांतिक प्रेम की अभिव्यंजना की है । लेकिन दोनों के प्रेम में अन्तर है । सुधा अपने प्रेमी और पिता के आग्रह से कैलाश के साथ शादी करती है । वह विवाह के पश्चात भी चन्दर के प्रति प्रेम करती है । जिससे वह शारीरिक और मानसिक यातना का कारण बनकर अन्त में प्राण त्याग देती है । इसके विपरित गेसू अपने प्रेमी के द्वारा तिरस्कृत होने पर भी उसके प्रति प्रेम करती है । गेसू जैसा आदर्श चरित्र समाज में मिलना मुश्किल है ।

उपन्यासकार बिनती के चरित्र में जन्म से लेकर विवाह तक समाज द्वारा मिली हुयी लांछना प्रताड़ना का चित्रण करते है । साथ ही उसके चरित्र को परीस्थिति अनुरुप विद्रोही बनाते है । उपन्यास के अन्य पात्रों मे बर्टी का चरित्र अपनी निजि विशेषताएँ रखता है । उसके पागल विक्षिप्त जीवन का सम्बन्ध मनोवैज्ञानिकता से जोड़ दिया है । पम्मी को शारीरिक महत्ता की सूचक दिखाया गया है । उपन्यास में पम्मी के चरित्र का प्रधानकार्य है– "चन्दर की विक्षुब्ध मानसिक आवस्था में अपने शारीरिक आकर्षण और उद्दाम वासना से तृप्ति एवं संतोष प्रदान करना है ।

उपन्यासकार "सूरज का सातवाँ घोडा" में पात्रों के चरित्र का सम्बन्ध यथार्थ से

जोड देते है । उन्होने नायक के जीवन का केन्द्र-बिंदू "प्रेम को दिखाया है । उसके आंतरिक दोषो के कारण उसका प्रेम निष्फल होता है । जिससे वह अपने जीवन के साथ प्रेमीकाओं के जीवन की दुर्दशा का कारण बनता है ।

उपन्यासकार तन्ना को उपन्यास में सहनायक का स्थान देते है । तन्ना का चरित्र मध्यमवर्गीय जीवन की कटुता का शिकार बन जाता है । इसका देवत्व रुपही उसकी दुर्दशा का कारण होता है । उपन्यास कें स्त्री पात्रों के चरित्र का उद्घाटन बडी सफलतासे हुआ है । उपन्यास में जमुना का चरित्र नैतिक पतन का कारण बन जाता है । लेखक जमुना का विवाह से पूर्व का जीवन, वैवाहिक जीवन और वैधव्य जीवन इन तीन आवस्थाओंमें होनेवाली दुर्दशा तथा उसके कारणो तथा परिणामोंपर प्रकाश डालते है । लिली का चरित्र अविकसित दिखायी देता है । उसके पूवार्ध्द जीवन के रोमांटिक प्रेम की निरर्थकता और वैवाहिक जीवन की असंतुलता को दिखाया है । इन स्थितियों से उत्पन्न शोकांतिका का यथार्थ, प्रभावोंत्पादक चित्र उपस्थित हुआ है । उपन्यासकार स्त्री पात्रों में सत्ती का चरित्र सशक्त एवं सजीव बनाने में सफल हुए है । उन्होने सत्ती के चरित्र में मानवीय गुणों के साथ पाशविक दुर्बलताओं का समन्वय दिखाया है ।

"सूरज का सातवाँ घोडा" के गौण पात्रों में महेसर दलाल और चमन ठाकुर आते है । इनमें महेसर का चरित्र खलनायक के रुप में दिखाया है । तो चमन ठाकुर को अपात्र, दोष-युक्त व्यक्ति के रुप में दिखाया है ।

इसप्रकार दोनोंही उपन्यासों के प्रमुख पात्र तथा गौण पात्र अपनी-अपनी जगह सही चित्रित हुए है और उन्हे गुण-दोषों से युक्त दिखाया है । ये सभी पात्र निम्न-मध्यवर्गीय समाज से उठाये गये हैं । ये सभी पात्र अपने अर्तन्द्वन्द्व से पीड़ित है । अतः इनके आदर्श और यथार्थ चित्रण करने में उपन्यासकार सफल हुए है ।

स न्द र्भ

1.	डॉ. ज्ञानराज गायकवाड	साहित्य रुप : शास्त्रिय विश्लेषण	पृ. 93 ।
2.	धर्मवीर भारती	गुनाहों का देवता	पृ. 105 ।
3.	वही	वही	पृ. 140 ।
4.	वही	वही	पृ. 152 ।
5.	वही	वही	पृ. 193 ।
6.	सम्पा. लक्ष्मणदत्त गौतम	धर्मवीर भारती	पृ. 93 ।
7.	डॉ. धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ. 223 ।
8.	वही	वही	पृ. 101 ।
9.	वही	वही	पृ. 101 ।
10.	वही	वही	पृ. 106 ।
11.	वही	वही	पृ. 160 ।
12.	वही	वही	पृ. 256 ।
13.	डॉ. कैलाश जोशी	धर्मवीर भारती का साहित्य	पृ. 33 ।
14.	डॉ. धर्मवीर भारती	गुनाहों का देवता	पृ. 17 ।
15.	वही	वही	पृ. 18 ।
16.	वही	वही	पृ. 207 ।
17.	वही	वही	पृ. 77 ।
18.	वही	वही	पृ. 204 ।
19.	वही	वही	पृ. 179 ।
20.	वही	वही	पृ. 140–141 ।

21.	डॉ. धर्मवीर भारती	"गुनाहों का देवता"	पृ. 186 ।
22.	वही	वही	पृ. 156 ।
23.	वही	वही	पृ. 26 ।
24.	वही	वही	पृ. 30 ।
25.	वही	वही	पृ. 199 ।
26.	वही	वही	पृ. 66 ।
27.	वही	वही	पृ. 150 ।
28.	डॉ. धर्मवीर भारती	"सुरज का सातवाँ घोडा"	पृ. 34 ।
29.	वही	वही	पृ. 66 ।
30	वही	वही	पृ. 50 ।
31.	वही	वही	पृ. 65 ।
32.	डॉ. पुष्पा वास्कर	धर्मवीर भारती व्यक्तित्व एवं कृतित्व	पृ. 136 ।
33.	डॉ. धर्मवीर भारती	सूरज का सातवाँ घोडा	पृ. 82 ।
34.	वही	वही	पृ. 86 ।
35.	वही	वही	पृ. 79 ।
36.	डॉ. चन्द्रभानु सोनवणे	धर्मवीर भारती का साहीत्य सृजन के विविध रंग	पृ. 115 ।
37.	सम्पा. लक्ष्मणदत्त गौतम	"धर्मवीर भारती"	पृ. 95 ।
38.	डॉ. धर्मवीर भारती	सूरज का सातवाँ घोडा	पृ. 28 ।
39.	वही	वही	पृ. 51 ।
40.	सम्पा. लक्ष्मणदत्त गौतम	"धर्मवीर भारती"	पृ. 51 ।
41.	डॉ. धर्मवीर भारती	"सूरज का सातवाँ घोडा"	पृ. 81 ।
42.	वही	वही	पृ. 39 ।
43.	डॉ पुष्पा वास्कर	धर्मवीर भारती: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	पृ. 127 ।